जल प्रदूषण

डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'

नाटक

जल-प्रदूषण

पात्र-परिचय

स्वामी सत्यानन्द जी- आयु लगभग साठ वर्ष
स्वामी सत्यभूषण जी-आयु लगभग पचास वर्ष

वेशभूषा

दोनों गेरुआ वस्त्र पहने हैं।
मंच संचालक व कुछ अन्य सन्त

श्रोतागण

स्त्री-पुरुष व बच्चे
(सभी आयु वर्ग के लोग हैं)

वेशभूषा

पात्र अभिनय के अनुकूल वेशभूषा

(दृश्य)

(मंच पर सन्त-सम्मेलन का दृश्य है व स्टेज बना है। स्टेज पर कुछ सन्त लोग सफेद या गेरुए वस्त्रों में बैठे हैं। माइक लगा है। नीचे दरी पर श्रोता लोग बैठे हैं। श्रोताओं में स्त्री, पुरुष व बच्चे सभी लोग हैं।)

मंच संचालक- आज सुप्रसिद्ध सन्त स्वामी सत्यानन्द जी जल-प्रदूषण के कारण और निवारण की चर्चा करेंगे।

कुछ श्रोतागण- (एक साथ) जल प्रदूषण की?

मंच संचालक- हाँ, सन्त लोग जीवन से जुड़ी हर उस गतिविधि का विवेचन करते हैं, जिससे जीवन सुखी हो सके। जल-प्रदूषण भी हमारे लिए बहुत दुःखदायी हो गया है।

एक श्रोता- बिल्कुल ठीक कहा आपने।

स्वामी सत्यानन्द जी- भाइयो, बहनो एवम् प्यारे बच्चो! आज हम चर्चा करेंगे, जल प्रदूषण की, नदी प्रदूषण की। जल जीवन है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम जल को संरक्षित करें व जल-प्रदूषण रोकें। प्रदूषित-जल से अनेकानेक जलजनित बीमारियाँ हो जाती हैं। जैसे-आँतों के कृमि, हेपेटाइटिस, टायफाइड आदि।

जल-प्रदूषण के बहुत से कारण व निवारण हो सकते हैं-

- कृषि क्षेत्रों से रासायनिक उर्वरकों एवं फसलों में प्रयुक्त होने वाले कीटनाशी रसायनों आदि से जल का प्रदूषण होता है। वे रसायन जल के साथ भूमि में रिसकर नीचे पहुँच जाते हैं तथा भूमिगत जल को भी प्रदूषित कर देते हैं। वर्षा के समय स्त्रोतों से जल के साथ वह रसायन बह कर पास में स्थित तालाबों, झीलों तथा नालियों में मिल जाते हैं तथा नदियों के जल को भी प्रदूषित कर देते हैं। इसलिए खेतों में कीटनाशकों तथा रसायनों का प्रयोग कम से कम किया जाए तो धरती की उर्वरा क्षमता में भी वृद्धि होगी और भौमजल भी प्रदूषित होने से बच सकेगा तथा स्वास्थ्यवर्धक उपज भी प्राप्त हो सकेगी।
- कारखानों व औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला गन्दा जल तथा रासायनिक प्रदूषक नदियों, झीलों एवम् तटीय सागर के जल को प्रदूषित करते हैं। इसलिए कारखानों आदि से निकलने वाला कचरा, प्रदूषण आदि स्त्रोत पर ही रोक लिया जाए व शोषित कर उसे पुनर्चक्रित (Recycle) किया जाए।
- विद्युत तापगृहों द्वारा निकलने वाली राख वर्षों तक जमीन पर बेकार पड़ी रहती है, जिसमें मिली हुई धातुएँ जमीन के अन्दर प्रवेश कर भूमिगत जल को विषाक्त बना देती हैं।
- घरों, घुड़सालों, कार्यालयों, शौचालयों आदि का तरल व ठोस कचरा नदियों, झीलों, तालाबों आदि से मिलने पर जल प्रदूषित होता है। इसलिए घरों

से निकलने वाले कचरे को नालियों, नालों, नदियों, झीलों, तालाबों आदि में जाने से रोका जाए। कचरे का शोधन करके उससे खाद तथा जैव विद्युत उत्पादित की जाए।

- कहीं-कहीं पर बिना जले या अधजले शव नदी में छोड़ दिए जाते हैं, जिससे जल प्रदूषित होता है। इसलिए मृत मनुष्यों तथा मृत-पशुओं के लिए विद्युत शवदाह-गृहों का निर्माण करवाया जाए। यदि धार्मिक परम्पराओं के कारण मृत-मनुष्यों को उनके रिश्तेदार विद्युत शवदाह-गृहों में ले जाने के लिए तैयार न भी हों तो कम से कम मृत पशुओं को तो अनिवार्य रूप से विद्युत शवदाह-गृह में ही ले जाया जाए।
- आणविक एवम् नाभिकीय ऊर्जा के प्रयोग से रेडियो सक्रिय पदार्थ से भी जल का प्रदूषण होता है।
- तालाबों एवम् नदियों में नहाते या कपड़े धोते समय साबुन के प्रयोग से भी जल गन्दा होता है। इसलिए नदियों में साबुन से नहाने व साबुन से कपड़े धोने की सख्त मनाही हो।
- इसके अतिरिक्त जल-प्रदूषण के अन्य भी बहुत से कारण हो सकते हैं जैसे-पॉलिथिन व प्लास्टिक का प्रयोग, जिससे पानी के बहाव में कमी आती है, फलस्वरूप पानी प्रदूषित हो सकता है। इसलिए नदियों में पॉलिथिन न डालने दी जाए। लोग अपनी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नदी में फूल चढ़ाते हैं, साथ में लायी हुई पॉलिथिन भी उसमें डाल देते हैं। आप लोगों से निवेदन है कि पॉलिथिन नदी में न डालें। पॉलिथिन नदी में डालने वालों पर जुर्माना लगना चाहिए।
- पॉलिथिन के निर्माण पर ही रोक लगा दी जाए।
- जल का पुनः चक्रण और पुनः उपयोग किया जा सकता है। जैसे- शोधित अपशिष्ट जल का प्रयोग उद्योग-धन्धों, शीतलन एवम् अग्नि शमन में किया जा सकता है।

इसी प्रकार जल-प्रदूषण नियन्त्रण के अन्य अनेकानेक विकल्प सोचे जा सकते हैं। अब आगे स्वामी सत्यभूषण जी बोलेंगे।

(स्वामी सत्यभूषण जी के सामने माइक कर दिया जाता है।)

स्वामी सत्यभूषण जी- सभी के हृदय में स्थित परमशक्ति को मेरा प्रणाम! जल-प्रदूषण के कारण व निवारण पर अभी सारगर्भित चर्चा हुई। मैं सागर प्रदूषण व उसके निवारण पर प्रकाश डालूँगा। सागरों को प्रदूषण मुक्त रखने की बहुत आवश्यकता है क्योंकि सागर-प्रदूषण समुद्र में रहने वाले पादपों और जीवों के लिए घातक है। इससे जैव विविधता का ह्रास हो सकता है।

इसके अतिरिक्त अन्य कारणों से भी सागरों को प्रदूषण मुक्त रखना आवश्यक है-

- समुद्र तेल और खनिज-पदार्थों के अक्षय भण्डार हैं। सम्पूर्ण विश्व में खपत होने वाले पेट्रोलियम का एक-चौथाई हिस्सा समुद्रों से प्राप्त होता है।
- वैज्ञानिकों के अनुसार समुद्र में अरबों-खरबों की मात्रा में मैगनीज, ताँबा, निकिल, जस्ता जैसे खनिज मौजूद हैं।
- समुद्र में औषधियों और रसायनों के भी भण्डार होने की सम्भावना है।
- वैदिक संस्कृति में समुद्र को रत्नाकर कहा जाता है। अतः सम्भावना है कि समुद्र में रत्नों का भी अक्षय भण्डार हो।

एक श्रोता- (हाथ ऊपर करता है।)

स्वामी जी- हाँ बन्धुवर?

श्रोता- स्वामी जी! अगर समुद्र से रत्न निकल आवें तो हमारा देश तो विश्व में सबसे समृद्ध हो जाएगा।

स्वामी जी- (मुस्कराते हुए) बन्धुवर! समुद्र का भाग अन्य देशों में भी तो है। समुद्रों के बढ़ते हुए प्रदूषण से विश्व के सभी देश चिन्तित हैं। जून 1972 में स्टॉकहोम में सम्पन्न हुए 11 देशों के अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन में सागर प्रदूषण का मसला उठाया गया था। सभी तटवर्ती देश इस बात से सहमत हो गए हैं कि पारे और संखिया जैसे प्राणघातक जहर समुद्र में न फेंके जाएँ। आशा है अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय प्रयासों से सागर-प्रदूषण नियन्त्रण की दिशा में कुछ सार्थक कदम उठाए जाएँगे तथा इसके सुन्दर परिणाम भी प्राप्त होंगे।

एक श्रोता- स्वामी जी! यदि सागर-प्रदूषण के कारणों का पता लग जाए तो कारणों का निवारण करके प्रदूषण को रोका जा सकता है।

स्वामी सत्यभूषण जी- बहुत अच्छा प्रश्न है। सागर-प्रदूषण के बहुत से कारण हो सकते हैं-

- तटवर्ती क्षेत्रों में तमाम तरह का औद्योगिक मलबा समुद्र में गिराया जा रहा है।
- जहाजों के दुर्घटनाग्रस्त होने पर बड़ी मात्रा में तेल फैल जाता है।
- जहाजों से कच्चा पेट्रोल निकालते व डालते समय लाखों लीटर पेट्रोल समुद्र में गिर जाता है।
- खाड़ी युद्ध के दौरान समुद्र में बहुत सा पेट्रोल फैल गया था।
- अरबों टन घरेलू गन्दगी नदियों के माध्यम से या सीधे ही सागर में बहा दी जाती है।
- तटीय क्षेत्रों पर करोड़ों लोग बसे हैं। यहाँ पर काफी पर्यटक भी आते हैं किन्तु जल निकासी की समुचित व्यवस्था न होने के कारण सारा मल जल समुद्र में डाल दिया जाता है।

इन कारणों के समुचित निवारण की नीति बनाकर सागर को भी प्रदूषण मुक्त किया जा सकता है।

(पटाक्षेप)

संपर्क करें:
डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'
आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-110 060